IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिमाचल प्रदेश में शास्त्रीय संगीत के उत्थान के लिए संगीत मर्मज्ञों का योगदान

शोधार्थी : सुनील कुमार

प्रदर्शन एवं ललित कला विभाग

केन्द्रीय विश्वविद्यालय पंजाब, बठिंडा

सारांश : इस धरा की शुद्दता एवं पावनता के कारणवश हिमाचल प्रदेश को देवभूमि कहकर पुकारा जाता है। यहाँ के लोग अपने देवी देवताओं के आशीर्वाद पर इतने समर्पित हैं की उनका कोई भी त्यौहार बिना देव–देवी पूजन के नहीं मनाया जाता है। हिमाचल प्रदेश के बारे में बात की जाए तो जितने प्राचीन हमारे वैदिक ग्रन्थ है उतना ऐतिहासिक इसका अस्तित्व है। हिमाचल में आर्य संस्कृति के आगमन से कुनिन्द्गण, गंधर्वगण, कुलूतगण, त्रिगर्तगण, औदुम्बरगण, त्रिगर्तगण और शतद्रुगण जैसे वंशो का अस्तित्व सामने आया[1]।

हिमाचल की अधिकांश जनता ग्रामीण इलाको में निवास करती है तथा इनका मुख्य व्यवसाय आज भी खेतीबाड़ी ही है, यहाँ के लोग अपनी संस्कृति को बहुत मानते है तथा उतनी ही शिद्दत से संस्कृति को बचाने में अपना योगदान देते हैं। आज भी अनेकों जातियां यहाँ ऐसी है जो प्राचीन काल से यहाँ निवास करती आ रहीं हैं। हिमाचल प्रदेश पर अधिकतर लोकसंगीत की छाया रही है। शास्त्रीय संगीत का इतिहास यहाँ इतना गूढ़ नहीं मिलता है परन्तु आधुनिक समय में लोकसंगीत के साथ साथ शास्त्रीय संगीत भी अपना वजूद स्थापित कर चूका है जितनी अभिलाषा के साथ लोग लोकसंगीत में सम्मिलित होते है उतनी ही चाह से शास्त्रीय संगीत भी सीख रहे हैं। इस शोध पत्र में वर्तमान समय में शास्त्रीय संगीत की सेवा कर रहे विद्वानों के योगदान पर चर्चा की गई है।

बीज शब्द : हिमाचल प्रदेश, शास्त्रीय संगीत, संस्कृति, आकाशवाणी

भूमिका: हिमाचल प्रदेश की जनता की बात की जाए तो यहाँ के लोग बहुत ही भोले–भाले, सब का आदर करने वाले और दयालु स्वाभाव के होते हैं। खेतीबाड़ी करने के साथ यहाँ के लोग पशुपालन भी करते हैं जिसमें गाय बैल भेड़ बकरियां भैंस इत्यादि प्रमुख हैं। हिमाचल प्रदेश को दो भागों में विभाजित किया जाता है अप्पर हिमाचल और लोअर हिमाचल। अप्पर हिमाचल अधिकतर इलाका पहाड़ियों से घिरा हुआ है तथा लोअर हिमाचल में मैदानी इलाका भी शामिल है, इसी कारण दोनों भाग में यहाँ की लोक संस्कृति, भाषाएँ, वेशभूषा खानपान सब अलग है। पहाड़ी या हिमाचली बोली यहाँ की प्रमुख भाषा है परन्तु देखा जाए तो 10–20 किलोमीटर के बाद यहाँ की बोली में अंतर आने लगता है। हिमाचल के लोग अपने रीति–रिवाजों और देवी देवताओं में बहुत विश्वास रखते है, इसलिए यहाँ का संगीत भी यहाँ की संस्कृति, रीति–रिवाजों, पारम्परिक संस्कारों पर निर्भर दिखाई देता है। यहाँ पर प्राचीन काल से कुछ संगीत जीवी जातियां पाई जाती है जिनका व्यवसाय ही संगीत है, गाने बजाने से ही इनका जीवन यापन चलता है। इनमे कुछ जातियां है– हेसी, डुमणे, मिरासी, कोली, लोहार, छोंदु, गांरा इत्यादि है।[2] हिमाचल प्रदेश में अधिकतर लोकसंगीत का प्रचार प्रसार अधिक रहा है, वर्तमान में जो शाश्त्रीय संगीत का स्तर देखने को मिलता है उसमे हिमाचल के कुछ महान कलाकारों का अतुल्य योगदान रहा है। भविष्य में विद्वानों द्वारा किये कार्यों को संजो कर रखना हमारा परम कर्तव्य है।

हिमाचल प्रदेश में शास्त्रीय संगीत के प्रमुख कलाकार

पंडित सोमदत्त बट्टू

हिमाचल प्रदेश में शास्त्रीय संगीत की उन्नति के लिए एक नाम सोमदत्त बट्टू जी का अवश्य लिया जाता है। आपका जन्म 11 अप्रैल 1938 को काँगड़ा में नूरपुर तहसील में हुआ था। आपके पिता जी का नाम श्री राम लाल बट्टू एवम् माता जी का नाम श्रीमती चानन देवी था। आपके पिता जी स्वयं शास्त्रीय संगीत के विद्वान थे। उनकी तालीम उस्ताद इनायत खां द्वारा हुई थी, जिस कारण आपकी संगीत की शिक्षा घर पर ही शुरू हो गयी थी। प्रारंभिक शिक्षा पिता जी से प्राप्त करने के बाद आपकी शिक्षा पंडित कुंजलाल शर्मा (पंजाब वाले) जी से हुई जो की ग्वालियर घराने के सुप्रसिद्ध विद्वान पंडित विष्णु दिगम्बर पुलुस्कर जी के शिष्य थे। इसके पश्चात् आपकी सांगीतिक शिक्षा पंडित कुंदन लाल जी से हुई जो पटियाला एवं पंजाब घराने के विख्यात कलाकार थे।इसके अलावा अपने उस्ताद आमिर खां से भी शिक्षा ग्रहण की है।

सन् 1955 से आप आकाशवाणी शिमला में बी हाई ग्रेड अनुमोदित शाश्त्रीय संगीत और सुगम संगीत के कलाकार हैं। शाश्त्रीय संगीत में बी हाई ग्रेड अनुमोदित आप पहले कलाकार थे। आपने 40 वर्षों तक महाविद्यालयों में शिक्षण प्रदान किया है। आपकी शाश्त्रीय संगीत, सुगम संगीत एवं लोकसंगीत की अथाह रचनायें हैं जो अब भी लोगों द्वारा सुनने को मिलती है। आपके द्वारा सिखाये गए शिष्य उच्च पदों में कार्यरत है तथा शाश्त्रीय संगीत को बढ़ावा दे रहे हैं। आपके प्रमुख शिष्यों में डॉक्टर यशपाल शर्मा, डॉक्टर जीतराम शर्मा, डॉक्टर प्रवीण जरेट, डॉक्टर टी.सी. कौल प्रमुख हैं।

- आप संगीत समारोहों के लिए नाइजीरिया, केन्या, यू.एस.ए, यू.के, टोबैगो, पकिस्तान आदि देशो का दौरा कर चुके हैं।
- आपने शिमला में आयोजित SAARC समारोह में पाकिस्तानी गायिका आबिदा परवीन जी के साथ भाग लिया है।
- आपको विदेश मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा एक उत्कृष्ट कलाकार के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- आपने देश के राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों में भी मंच प्रदर्शन किया है जैसे : स्वामी हरिदास संगीत सम्मलेन , हरिवल्लब संगीत सम्मलेन, साहित्य कला परिषद्, दिल्ली पंजाब कला भवन, संगीत नाटक अकादमी, रेडिओ–टीवी इत्यादि।
- आपको हिमाचल प्रदेश में लोक संगीत के प्रति कार्यशील रहने के लिए 2018 में 'संगीत नाटक अकादमी' पुरुस्कार से सम्मानित किया गया है।
- आपको हिमाचल सरकार द्वारा "हिमाचल गौरव" सम्मान दिया गया है
- पंजाबी अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा आपको "परम सभ्याचार सम्मान" दिया गया है।
- पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला द्वारा आपको "सरदार सोहन सिंह सम्मान" प्रदान किया गया है।
- पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला द्वारा "पंजाब संगीत रत्न" सम्मान प्रदान किया गया है।
- 'भाषा एवं संस्कृति विभाग' हिमाचल प्रदेश द्वारा आपको "सप्तक सम्मान" प्रदान किया गया है।

आपने हमारे देश की कुछ महान हस्तियों के समक्ष अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया है जिनमे से प्रमुख हैं :

- मई 1958 में डॉक्टर "राजेंद्र प्रसाद जी" के समक्ष।
- 22 नवम्बर 1962 को "जवाहर लाल नेहरु" जी के समक्ष।
- भारत की प्रधानमंत्री "इंदिरा गाँधी जी" के समक्ष।
- भारत के प्रधानमंत्री "श्री राजीव गाँधी" जी के समक्ष।
- भारत के राष्ट्रपति "डॉक्टर संजीव रेड्डी" जी के समक्ष।

- भारत के राष्ट्रपति "श्री ज्ञानी जैल सिंह" जी के समक्ष।

पंडित कश्मीरी लाल

हिमाचल प्रदेश में तबला वादकों में कश्मीरी लाल जी का नाम बहुत आदर से लिया जाता है। आपका जन्म 1 अक्टूबर 1956 में सोलन जिला के 'कोटला' गाँव में हुआ। आपके पिता जी का नाम श्री नारायण जी एवं माता जी का नाम श्रीमती कलावती था। आपके पिताजी व्यवसाय से तो किसान थे परन्तु उन्हें पारम्परिक लोक वाद्य बजाने में महारत हासिल थी। अपने पिता जी से आपने लोक वाद्य विधा की शिक्षा ग्रहण की। आपको अल्लारक्खा खां, लक्ष्मण सिंह सीन, पंडित प्रेम वल्लभ जी, लाहौर के शौकत हुसैन खां इत्यादि का तबला सुनना पसंद था। सर्वप्रथम संगीत शिक्षा आपने 'अनंत राम चौधरी' जी से ली, जो की उस समय हिमाचल में एक बड़ा नाम हुआ करते थे। आपके गुरु जी के लक्ष्मण सिंह सीन बहुत अछे मित्र हुआ करते थे, आपने उनसे शिक्षा ग्रहण करने की इच्छा जाहिर की, आपके गुरु जी ने उनको एक पत्र लिख कर भेजा तथा आपको जालंधर जाने को कहा। वहां जाकर आपने 'राजकीय हंसराज महिला महाविद्यालय' में साक्षात्कार दिया तथा वहां आपका चयन हो गया। वहीँ से आपकी विधिवत शिक्षा "लक्ष्मण सिंह सीन" जी की देखरेख में आरम्भ हुई। वहीं पर हरिवल्लब संगीत सम्मलेन में आपकी मुलाकात 'पंडित सामता प्रसाद', 'पंडित किशन महाराज' तथा 'जाकिर हुसैन' जी से हुई।

सन् 1992 में आपको आकाशवाणी से बी हाई ग्रेड प्राप्त हुआ जिसके बाद से आप निरंतर आकाशवाणी से जुड़े रहे। आपने कई वर्षों तक हिमाचल में महाविद्यलों में अपनी सेवाएं दी है तथा 2016 में सेवानिवृत हुए हैं।

- आपकी विधिवत शिक्षा पंजाब घराने से हुई, आपने पंजाब घराने की तबला वादन शैली की नींव हिमाचल प्रदेश में रखी।
- लगभग 1992 के बाद से आप घर पर तबला वादन की विधिवत शिक्षा शिष्यों को प्रदान कर रहे हैं। आपकी रचित अनेक बंदिशें संपूर्ण हिमाचल में शिष्यों को सिखाई जाती है।
- आपने गेयटी थिएटर में कई बड़े राष्ट्रीय, अन्तराष्ट्रीय संगीत विद्वानों के साथ संगत की है, उनमे से कुछ नाम : एहमद–मोहम्मद हुसैन जी, डॉ रोशन भारती, पंडित सतीश शर्मा, पंडित भीमसेन शर्मा, पंडित हरविंदर शर्मा आदि।
- सन् 2008 में आपको राष्ट्रीय शास्त्रीय संगीत सम्मलेन, संकल्प संस्था शाखा फैजाबाद द्वारा सम्मानित किया गया। चन्ना अकादमी संस्था और गायिका पिनाज मसानी द्वारा आपको "लाइफटाइम अचीवमेंट" सम्मान दिया गया।
- अनेकों बार आपको मुख्यमंत्री जी द्वारा "कला सम्मान से नवाजा गया है।
- आपके कुछ वरिष्ठ शिष्य हैं जिन्होंने तबला वादन में बड़ा नाम अर्जित किया है उनमे सेः श्री नीरज शाण्डिल और श्री राजेश भट्टी आकाशवाणी से ए ग्रेड कलाकार है। श्री ललित रघुवंशी, श्री देवेन्द्र ठाकुर ने राष्ट्रीय स्तर से पुरुस्कार प्राप्त करके हिमाचल का नाम गौरवान्वित किया है।

श्री कैलाश सूद

कैलाश जी को कैलाश गुरु जी कहकर भी बुलाया जाता है। आपको हिमाचल के विशेष सितार वादकों में प्रमुख माना जाता है। आपका जन्म 1930 में गर्ली, प्रागपुर में हुआ जो काँगड़ा जिले में स्थित है। आपकी माता जी भजन गाया करती थी जिस कारण आपकी रूचि संगीत में उत्पन्न हुई। आपके गाँव में रामलीला के समय वृन्दावन से संगीत के कलाकारों की मंडली आया करती थी जिनमे आप 'नवल किशोर भोजकीय' जी की गायकी से बहुत प्रभावित थे, उनको सुन कर ही आपने संगीत की शिक्षा लेना आरम्भ किया। आपके प्रथम संगीत के गुरु 'जगन्नाथ भार्गव' जी थे उनसे आपने संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण की थी। उसके बाद आपने होशियारपुर जा कर पंजाब घराने के "मदनलाल बाली" और बड़े बाली साहब "हरिश्चंद्र बाली" जी से शिक्षा ली। कॉलेज के दिनों में अमरीश पूरी एवं प्रेम चोपड़ा साहब आपके मित्र हुआ करते थे। यश चोपड़ा जी ने आपको 'असिस्टेंट डायरेक्टर' के लिए

बुलाया था परन्तु आप स्वतंत्र रहकर ही संगीत की सेवा करना चाहते थे। आप बताते है की 1957 में पहली बार आपकी मुलाकात उस्ताद विलायत खां से हुई थी, उस समय वह शिमला में 'परी महल' में रहते थे। उनका आपके घर आना जाना लगा रहता था सन् 1961 में आप विलायत खां साहब से सिखने कोलकाता गए तथा वहां रहकर उनसे विधिवत तालीम ली। उसके बाद काफी समय तक आप हैदराबाद में रहे, वहा आपने बहुत से लोगों को संगीत की तालीम दी उनमे से एक "तलत अजीज साहब" थे जो आज देश में जाने माने गजल गायक है। उन्होंने आपसे संगीत की शुरुआती तालीम ग्रहण की थी

- कैलाश सूद जी हिमाचल के जाने माने सितार वादकों में से एक है। उन्होंने विलायत खां साहब से संगीत की शिक्षा प्राप्त की जो सम्पूर्ण हिमाचल के लिए गौरव की बात है।

- कैलाश जी ने तलत अजीज साहब को संगीत की शिक्षा दी है, जो आज गजल गायकी में बड़ा नाम है।

- आकाशवाणी से आप बी हाई ग्रेड अनुमोदित कलाकार है साथ ही आप संगीत्कारिता में भी ग्रेड II कलाकार है।

- अधिकतर कैलाश जी ने देशभक्ति गीतों की रचना की है जो बेहद सुंदर हैं। प्रवीण जरेट जी आपके पसंदीदा शिष्य रहे हैं आपकी अधिकतर रचनाएँ उन्होंने ही गायी हैं।

- आपके शिष्य कल्पना जी और प्रवीण भाटिया जी अछे पद पर कार्यरत हैं।

श्री मनोज कुमार शर्मा

हिमाचल में शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में मनोज कुमार शर्मा प्रमुख कलाकार रहे हैं। आपका जन्म 16 सितम्बर 1961 में हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले में हुआ। आपके पिता जी का नाम मतीधर शर्मा एवं माता जी का नाम कौशल्या देवी था। आपके पिता जी शिक्षा विभाग में मुख्य अध्यापक थे. पारिवारिक माहौल शिक्षित होने की वजह से आपको संपन्न शिक्षा का वातावरण मिला। आपकी बचपन से ही संगीत में रूचि थी जिस कारण आपका अधिकतर बचपन ननिहाल में ही बीता। आपके मामा जी "पंडित जयप्रकाश जी" संगीत के विद्वान थे तथा किराना घराने से सम्बन्ध रखते थे। अपने मामा जी से आपने संगीत की तालीम ली उसके बाद जब आपने महाविद्यालय में दाखिला लिया वहां पर श्रीमती शुक्ला शर्मा जी संगीत की प्राध्यापिका थी जो संगीत के क्षेत्र में बड़ा नाम थी। उमसे शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत आपने जब स्नातकोत्तर में प्रवेश लिया वहा आपके गुरु पंडित भीमसेन शर्मा जी थे। उनके सानिध्य में अपने संगीत की बहुत सी विधाएं सीखी साथ ही तबला बजाना भी सीखा।

1985 में आपने आकाशवाणी रेडियो में शास्त्रीय संगीत एवं सुगम संगीत की प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया आप आकाशवाणी से बी हाई ग्रेड अनुमोदित कलाकार थे। आपने लगभग 30 वर्ष महाविद्यलों में सेवाएं देकर बच्चों में शास्त्रीय संगीत की रूचि उत्पन्न की तथा 2019 में आप प्रधानाध्यापक के पद से सेवानिवृत हुए।

- हिमाचल की पहली फिल्म 'फुल्मु रांझू' जो की दिव्य हिमाचल द्वारा बनाई गयी थी इसमें आपने संगीत निर्देशक के रूप में कार्य किया था। इसके अलावा आपने मोहणा, तेरे प्यारो री ताईएं, लोअर महान्सू आधी फिल्मों में भी बतौर संगीत निर्देशक कार्य किया है।

- आपने आकाशवाणी में कार्यरत 'दरबारी लाल कसवालिया' की एक एल्बम 'सॉग ऑफ द मन्थ' में अपनी आवाज दी थी, इसके लिए कसवालिया जी को नम्बर-1 कंपोजर घोषित किया था।

- आपने कुछ ऑडियो एलबम्स में भी अपनी आवाज दी है, एक एल्बम उन दिनों की है जब आप विश्वविद्यालय में पढाई कर रहे थे उस समय 'भाषा एवं संस्कृति विभाग' ने एक ऑडियो एल्बम निकाली जिसमे हर जिले की संस्कृति को दिखाना था उसके लिए आपका चयन किया गया था।

- आपने 'वो कॉलेज के दिन' नाम की एक एल्बम में भी कार्य किया है।

- आपने आकाशवाणी से स्वर परीक्षा देकर सम्पूर्ण भारत में प्रथम स्थान प्राप्त किया था तथा आप आकाशवाणी से बी हाई ग्रेड अनुमोदित कलाकार थे, आपके समय समय पर आकाशवाणी द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं। आपकी अनेक शास्त्रीय और उप शास्त्रीय संगीत की रचनायें आज भी महाविद्यालयों में सुनने को मिलती हैं।

28 दिसम्बर 2021 में बीमारी के चलते आपको इस दुनिया को अलविदा कहना पड़ा।

डॉक्टर रामस्वरूप शांडिल

डॉक्टर रामस्वरूप शांडिल जी हिमाचल के उत्तम कलाकार होने के साथ साथ उत्तम व्यक्तित्व के धनी भी हैं। आपका जन्म 23 नवम्बर 1956 को हिमाचल प्रदेश के सोलन जिले के चायल गाँव में हुआ। आपके पिता जी का नाम स्वर्गीय श्री मंसाराम एवं माता जी का नाम श्री मति सोबनी देवी था। आपके पिता जी व्यवसाय से कृषक से तथा माता जी गृहणी जिस कारण आपको घर पर संगीत का माहौल नहीं मिल पाया, परन्तु आपमें बचपन से ही संगीत के गुण थे।

आपके चार भाई तथा तीन बहनें हैं जिनमें आप सबसे अनुज थे। आपके बड़े भाई साहब को लिखने का शोक था, वे कवितायँ तथा गीत लिखा करते थे जिन्हें आप अपने दुसरे बड़े भाई के साथ गुनगुनाया करते थे। बड़ा परिवार होने के कारण आपकी मुख्य आवश्यकता शिक्षा ग्रहण करना था जिस कारण बचपन में आप संगीत शिक्षा ग्रहण नही कर सके। आपने संगीत की विधिवत शिक्षा 'श्री अनंतराम चौधरी' जी से ग्रहण की, अनंतराम जी देखने में सक्षम नहीं थे इसलिए आपने 5 से 6 वर्ष तक उनके साथ रहकर ही उनकी सेवा की। सन् 1992 में आपने विद्यावाचस्पति की पढाई पूर्ण की। 1993 से लेकर आपने 2017 तक हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में संगीत प्रवक्ता रहे, 2017 में आप बतौर आचार्य शिक्षक जीवन यापन कर के सेवानिवृत हुए।

- डॉक्टर रामस्वरूप शांडिल जी ने शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत में बहुत बड़ा नाम अर्जित किया है। आपकी बहुत सी ख्याल बंदिशों की रचनायें आज भी शैक्षणिक संस्थानों में सुनने को मिलती है।

- सन् 1976 से आप आकाशवाणी के लोक संगीत के अनुमोदित कलाकार हैं, सन् 1985 में आपने हिमाचली लोक संगीत में बी हाई ग्रेड प्राप्त किया था सन् 1986 से आप सुगम संगीत में बी ग्रेड प्राप्त कलाकार हैं तथा सन् 2000 में आपने शास्त्रीय संगीत में बी हाई ग्रेड प्राप्त किया था।

- आपने आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर कई स्थानों में मंच प्रदर्शन किया है, जिसमे हिमाचल, पंजाब, जालंधर, रोहतक, दिल्ली, जयपुर, नागपुर, बनारस, कोलकाता, जम्मू और नैनीताल इत्यादि हैं।

- आपने हिमाचली टेलीफिल्म "पतझड़" के लिए अपनी आवाज प्रदान की है।

- आपके द्वारा रचित गजल 'तुम्हारा राज' को 2014 में आशीष चौहान जी ने अंतर्राष्ट्रीय SAARC सम्मलेन में गाकर भारत का प्रतिनिधित्व किया था।

- सन् 2011 में आपके द्वारा विश्वविद्यालय के 'कुलगीत' को स्वरबद्ध किया गया जिसके लिए आपको हिमाचल के राज्यपाल द्वारा सर्वश्रेष्ठ संगीत रचनाकार एवं शिक्षक के पुरुस्कार से सम्मानित किया गया था।

- 17 अक्टूबर 2017 को एच०यू०म्यूजिक एंड फिल्म्स पी०लिमिटेड द्वारा आपको "द लेजंड ऑफ क्लासिकल एंड फोक म्यूजिक" सम्मान प्राप्त हुआ।

निष्कर्ष:

हिमाचल प्रदेश में शास्त्रीय संगीत के प्रचार प्रसार के लिए बहुत से संगीत के बुद्धिजीवियों का योगदान रहा है। हिमाचल में संगीत से सम्बन्ध रखने वाला शायद ही कोई व्यक्ति हो जो गुरु समान हस्तियों से परिचित न हों, देखा गया है की हिमाचल में अधिकतर लोगों का झुकाव लोक गायन की तरफ रहा हैं, परन्तु वर्तमान में उर्पयुक्त विद्वानों नें शास्त्रीय संगीत को भी लोगों के दिलों तक पहुँचाया। इन सभी विद्वानों का हमारी सबसे प्राचीन धरोहर को आगे ले जाने में बहुत बड़ा योगदान रहा है तथा हमारा यह दायित्व बनता है की भविष्य में आने वाली पीड़ियों के लिए उनके प्रत्येक कार्य को संभाल के रखें तथा उनका नाम सदैव मर्यादा से लिया जाए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 दिलैक, विशाल. विशाल हिमाचल, युग पब्लिशर्स, ज्ञान देवी भवन, अप्पर कैथू, शिमला–171001

2 चौहान, आशीष (2022). हिमाचल प्रदेश के लोक वादकों का सांगीतिक योगदान (अप्रकाशित विद्या वाचस्पति शोध प्रबंध) संगीत विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय समरहिल, शिमला, हिमाचल प्रदेश।

साक्षात्कार

1 पंडित सोम दत्त बट्टू, 28 मई, 2022
2 पंडित कश्मीरी लाल, 23 अप्रैल, 2022
3 श्री कैलाश सूद, 23 अप्रैल, 2022
4 श्रीमति अल्का शर्मा, श्री रघुवीर शर्मा, 11 जून, 2022
5 डॉक्टर रामस्वरूप शांडिल, 20 अप्रैल, 2022